भारत सरकार

गृह मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 198

दिनांक 24.02.2015/5 फाल्गुन, 1936 (शक) को उत्तर के लिए

जम्मू एवं कश्मीर में मुठभेड़

198. श्री दलपत सिंह परस्ते:
श्री आर० ध्रुवनारायण

क्या **गृह मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या देश की सीमा पर जम्मू एवं कश्मीर राज्य में आतंकवादियों तथा सुरक्षा बलों के मध्य मुठभेड़ की घटनाओं में वृद्धि हुई है;

(ख) यदि हां, तो पिछले एक वर्ष तथा वर्तमान वर्ष के दौरान सूचित मामलों की संख्या कितनी है;

(ग) उक्त अवधि के दौरान गिरफ्तार किए गए तथा मारे गए आतंकवादियों और सुरक्षा-कर्मियों की संख्या कितनी है; और

(घ) सरकार द्वारा ऐसी गतिविधियों को रोकने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं?

उत्तर

गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री हरिभाई परथीभाई चौधरी)

(क) से (ग) : जी, हां। विगत एक वर्ष तथा चालू वर्ष के दौरान जम्मू एवं कश्मीर राज्य में आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ होने की घटनाओं की संख्या, मारे गए आतंकवादियों की संख्या और मारे गए सुरक्षा कार्मिकों की संख्या नीचे दी गई है:-

---2/-

	आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ होने की घटनाओं की संख्या	गिरफ्तार आतंकवादियों/संदिग्ध व्यक्तियों की संख्या	मारे गए आतंकवादियों की संख्या	मारे गए सुरक्षा बल कार्मिकों की संख्या
2014	57	70	110	47
2015 (15 फरवरी, 2015 तक)	4	10	10	3

(घ): सरकार ने राज्य में शांति भंग करने के संबंध में उग्रवादियों के प्रयासों और क्षमताओं को निष्क्रिय करने के लिए विभिन्न आतंकवाद-रोधी तरीके अपनाए हैं। सरकार ने युवाओं को मुख्यधारा में लाने तथा स्थानीय युवाओं को उग्रवाद में शामिल होने से हतोत्साहित करने से संबंधित नीतियों को बढ़ावा भी दिया है। इसी प्रकार यह विशिष्ट दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिसका लक्ष्य है:-

(i) सीमापारीय आतंकवाद से सीमाओं की रक्षा करने तथा उग्रवाद को नियंत्रित करने के लिए सीमा सुरक्षा बलों द्वारा सक्रिय रूप से समुचित उपाय किया जाना।

(ii) यह सुनिश्चित करना कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया बनाई रखी जाए तथा सिविल प्रशासन की श्रेष्ठता कायम रखी जाए ताकि राज्य में लंबे समय से चले आ रहे उग्रवाद के प्रभावों के कारण लोगों के सामने आ रही सामाजिक-आर्थिक समस्याओं का प्रभावी तरीके से मुकाबला किया जा सके।

(iii) शांति प्रक्रिया की बहाली तथा राज्य में सभी वर्गों के उन लोगों को पर्याप्त अवसर मुहैया कराया जाना सुनिश्चित करना जो अपने दृष्टिकोण को प्रभावी तरीके से आगे रखने तथा अपनी वास्तविक समस्याओं के निराकरण के लिए हिंसा का त्याग करते हैं।

*****